

विचार बिन्दु

वृुटियों के संशोधन का नाम ही उन्नति है। –लाला लाजपत राँय

मौसमी बीमारियों के फैलाव का संकट

मानसून की विदाई के साथ-साथ अब मौसमी बीमारियों का दौर की शुरुआत होने लगी है। इस बार समूचे प्रदेश में मानसून की अच्छी बरसात हुई है। यहां तक अनेक स्थानों पर तो बाढ़ जैसे हालात बने वहीं जलभराव की समस्या से लगभग समूचे प्रदेश को दो चार होना पड़ा। खैर यह विषयांतर होगा पर यह साफ है कि पानी के भराव के कारण अब तेजी से मच्छरों का प्रकोप फैलेगा और इसके चलते मच्छरों के कारण तेजी से वायरल बुखार-खासी और इससे जुड़ी बीमारियों में तेजी आयेगी। ऐसे में आम नागरिकों के साथ ही मेडिकल विभाग को चाकचोबंद होने के साथ ही स्थानीय निकाय संस्थाओं को अभी से अधिक सक्रिय होना होगा। मच्छरों का प्रकोप बरसात से जमा पानी और गंदगी के कारण अधिक होता है। ऐसे में साफ-सफाई और गंदगी जमा नहीं होने देने के काम में निकाय संस्थाओं को अधिक सजगता से कार्य करना होगा वहीं मच्छरों को पनपने से रोकने के लिए फोगिंग व मच्छर नाशक कीटनाशकों का छिड़काव की तत्काल तैयारी करनी होगी। आमनागरिकों को भी आसपास पानी जमा नहीं होने देना होगा। इसके अलावा कूलर व घर के कबाड़ पुराने टायर आदि में पानी जमा नहीं होने देना होगा। सामान्य वाइरल से लेकर डेंगू और चिकनगुनिया जैसी मच्छर जनित बीमारियां तेजी से फैलेगी और अस्पतालों में बीमारों की लंबी लंबी कतार देखने को मिलेगी। ऐसे में स्वास्थ्य विभाग को भी वर्षा और मच्छर जनित बीमारियों के ईलाज और रोकथाम के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करनी होगी। खासतौर से दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी ताकि व्यवस्थाओं पर प्रश्न नहीं लगे और लोगों को त्वरित ईलाज सुविधा प्राप्त हो सके।

वैसे भी विश्व स्वास्थ्य संगठन की माने तो चिकनगुनिया अब विकराल रूप लेता जा रहा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार आने वाले समय में पांच अरब लोगों के इसके दायरे में आने की पूरी-पूरी संभावना है। हांलाकि चिकनगुनिया से मौत का आंकड़ा प्रभावितों में से केवल एक प्रतिशत है पर जिस तरह से इसके फैलने की संभावनाएं बनती जा रही हैं निश्चित रूप से मौत का आंकड़ा भी बढ़ेगा और लाख दावों के बावजूद इसके स्वास्थ्य पर दूरगामी गंभीर प्रभाव भी पड़ेगा। चिकनगुनिया की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि उष्णकटिबंधीय अफ्रीका से एशिया को लपेटे में लेने वाली यह बीमारी अब योरोप को भी अपनी जद में करीब-करीब ले चुकी है। दरअसल जलवायु परिवर्तन भी इसके फैलाव में सहायक है। तापमान बढ़ोतरी और नमी दोनों के कारण चिकनगुनिया का मच्छर फैलता है। जहां पानी जमा हुआ इसके मच्छर को डेरा जमाने का अवसर मिल जाता है। दुनिया के 1१9 देशों में चिकनगुनिया अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है। हमारे देश में तो पिछले कुछ वर्षों से चिकनगुनिया लगातार अपनी उपस्थिति दर्ज करा ही रहा है। यदि हमारे देश भारत की

पुराने कबाड़, कूलरों व अन्य पानी

जमा भले ही नाममात्र का ही जमा नहीं होने दे। इसी तरह से शरीर को ढंकने

वाले कपड़े जैसे पूरी बाहों के शर्ट, पैंट

आदि पहने और इसके साथ ही मच्छर

नाशकों का उपयोग कर मच्छरों के

प्रकोप से बचने और मच्छरों को फैलने

से रोके। इस तरह के सुरक्षा मानकों

की पालना करनी ही होगी।

नहीं होगी छट-बारह महीने अपना असर दिखाने लगी है। इस साल हमारे यहां मानसून ने समय से पूर्व प्रवेश किया है और राजस्थान ही नहीं अपितु देश के अधिकांश हिस्सों में अच्छी बरसात हो रही है। जिस तरह की हमारी ड्रेनेज व्यवस्था है और जिस तरह से जल भराव के हालात हो रहे हैं उससे चिकनगुनिया का प्रकोप व्यापक रूप से देखने को मिल सकता है। अल्पविभाषण परिवार के इस सदस्य एडिस के लार्वा के फैलाव को रोकने के लिए फोगिंग की प्रभावी व्यवस्था तो अभी दिखाई नहीं देती। फिर पानी का जमाव, गंदगी और बातावरण की नमी व लगातार बरसात के चलते मच्छरों का प्रकोप बढ़ेगा ही, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। दरअसल हम आपदा से निपटने के लिए पहले से तैयार रहते ही नहीं हैं। इसके साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर तो पानी का भराव, किचड़, गंदगी आदि तो है ही इसके साथ ही हमारी प्रवृति के अनुसार हम स्वयं मच्छर जनित बीमारियों को फैलने से रोकने के स्थान पर उसके फैलाव में सहभागी बन जाते हैं। घरों में पानी जमा होना और कबाड़ में पानी भरा रहना, कूलरों में पानी को समय से नहीं बदलना आदि ऐसे कारण हैं जिससे एडीज एंजिटी और एडीज एन्सेफाइटिस को पनपने में पूरा सहयोग मिलता है। विशेषज्ञों के अनुसार सुबह सुबह और दोपहर में यह अधिक सक्रिय रहता है।

बरसात व उसके बाद आवश्यक फोगिंग की व्यवस्था, साफ-सफाई और मच्छर के लार्वा को नष्ट करने की व्यवस्था और इसके साथ आमजन में अवैयरेनेस को गंभीरता से लिया ही नहीं जाता। मच्छर जनित बीमारी का फैलाव कबाड़ होगा इसके लिए पूर्व तैयारी हमारी होती ही नहीं। जब अस्पतालों में मरीजों की भीड़ होने लगती है तब हमारी जागने की प्रवृति है। नहीं तो अवैयरेनेस कार्यक्रम तो पहले से ही चलाया जा सकता है। ऐसे में सरकारों को अभी से प्रिकोसनरी रणनीति बना लेनी चाहिए ताकि इसके असर को कम किया जा सके। लोगों को भी अपने घर से ही सुरक्षा उपायों पर ध्यान देना होगा। खासतौर से पुराने कबाड़, कूलरों व अन्य पानी जमा भले ही नाममात्र का ही जमा नहीं होने दे। इसी तरह से शरीर को ढंकने वाले कपड़े जैसे पूरी बाहों के शर्ट, पैंट आदि पहने और इसके साथ ही मच्छर नाशकों का उपयोग कर मच्छरों के प्रकोप से बचने और मच्छरों को फैलने से रोके। इस तरह के सुरक्षा मानकों की पालना करनी ही होगी। नहीं तो जिस तरह से मानसून के पहले आने और अच्छी बरसात से जो लाभ हो रहा है वह मच्छरों के प्रकोप के फैलने से मच्छर जनित बीमारियों के फैलने का कारण भी बन जाएगा। मच्छर जनित बीमारियों की आपदा सामने है। अब आम नागरिकों से लेकर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग और स्थानीय निकायों को अपने-अपने दायित्वों को पूरा करने में जुट जाना होगा ताकि किसी को भी व्यवस्थाओं को लेकर कुछ सुनने का अवसर ही ना मिल सके व बीमारों को समय पर स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त हो सके।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल शनिवार 6 सितम्बर, 2025

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2082, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 10:56 तक, अतिगंड योग दिन 11:52 तक, गर करण दिन 22 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:21 से कुम्भ राशि में संवाह करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरु-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रविवोग रात्रि 10:56 तक है। भद्रा रात्रि 1:42 से आरम्भ होगा।

आज अनन्त चतुर्दशी व्रत, पंचक दिन 11:21 से आरम्भ होगा। आज भागवत साहाह पूर्ण होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:45 से 9:19 तक, चर 12:25 से 1:59 तक, लाभ-अमृत 1:59 से 4:59 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:39

मेघ	सिंह	धनु
व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।	व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या को समाधान हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।	घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

वृष	कन्या	मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन	तुला	कुंभ
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक समस्या हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।	घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।	परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेंगी।

कर्क	वृश्चिक	मीन
परिवार में आपसी समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।	व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थनिका से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।	आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

जीएसटी 2.0 कर सुधार का नया अध्याय



मदन राठौड़

देश की अर्थव्यवस्था में सुधार और पारदर्शिता की दिशा में 1 जुलाई 2017 को लागू हुआ वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) एक ऐतिहासिक कदम था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में

101वें संविधान संशोधन के माध्यम से लागू हुई यह कर प्रणाली केवल तकनीकी बदलाव नहीं थी, बल्कि एक गहरी सोच के साथ लिया गया निर्णय था जिसने देश को 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' की अवधारणा से जोड़ा। लंबे समय तक भारत में कर ढांचा जटिल और बोझिल रहा। कांग्रेस सरकारों के दौर में कभी साइकिल पर 17 प्रतिशत, सिलाई मशीन पर 16 प्रतिशत, सीमेंट पर 29 प्रतिशत और दवाओं व कृषि उपकरणों पर 12 से 14 प्रतिशत तक कर वसूला जाता था। राज्यों की अलग-अलग कर प्रणालियों ने आम उपभोक्ता, व्यापारी और उद्योग जगत को उलझन में डाल रखा था। उस समय की नीतियां जनता को राहत देने के बजाय उल्टा उनके बोझ को बढ़ाने वाली थीं। मोदी सरकार ने इस अव्यवस्था को

दूर करने का बीड़ा उठाया और जीएसटी लागू कर एक सरल, पारदर्शी और नागरिक हितैषी कर व्यवस्था दी। विशेषकर गरीब और मध्यम वर्ग के लिए राहत देने के उद्देश्य से जीवन रक्षक दवाओं, स्वास्थ्य बीमा और अन्य आवश्यक वस्तुओं को टैक्स मुक्त या न्यूनतम श्रेणी में रखा गया। यह निर्णय केवल आर्थिक सुधार नहीं बल्कि सामाजिक न्याय की दिशा में भी एक बड़ा कदम था।

अब एक नई ऐतिहासिक पहल के तहत 56वीं जीएसटी परिषद की बैठक में सर्वसम्मति से जीएसटी 2.0 लागू करने का निर्णय लिया गया है। 22 सितंबर 2025 से पूरे देश में केवल दो टैक्स स्लैब 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत लागू होंगे। इस निर्णय से कर प्रणाली और अधिक सरल होगी तथा आम जनता को सीधा लाभ

मिलेगा। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में कमी आएगी, घर बनाने की लागत घटेगी, ग्रेनाइट और मार्बल जैसी निर्माण सामग्री सस्ती होगी और रियल एस्टेट सेक्टर को नई गति मिलेगी। किसान, छात्र, युवा, महिलाएं और छोटे व्यापारी वर्ग सभी को इसका लाभ मिलेगा।

जीएसटी 2.0 के प्रभाव दूरगामी होंगे। मांग में वृद्धि होगी, उद्योगों को प्रतिस्पर्धा में मजबूती मिलेगी और निवेश व रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। छोटे और मध्यम व्यापारियों को कर अनुपालन में आसानी होगी और 'इज ऑफ डूइंग बिजनेस' को नई दिशा मिलेगी। भारत की विकास दर पहले से ही 8 प्रतिशत के आसपास रहने का अनुमान है और इस सुधार से फरेलू मांग और अधिक प्रबल होगी। यह निर्णय केवल कर सुधार नहीं बल्कि देश की

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता हुआ एक निर्णायक कदम है।

त्योहारी सीज़न से ठीक पहले लिया गया यह फैसला प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि और जनता के प्रति उनकी संवेदनशीलता का प्रतीक है। जहां कांटोस ने दशकों तक करों की भूलभुलैया बनाकर जनता को परेशान किया, वहीं भाजपा सरकार ने सरलता और पारदर्शिता को आधार बनाकर नागरिकों को राहत दी। यही अंतर खोखले वादों और ठोस फैसलों में दिखाई देता है। जीएसटी 2.0 केवल संख्याओं का फेरबदल नहीं, बल्कि भारत के आर्थिक इतिहास का वह अध्याय है जो आने वाले समय में देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा करने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

–मदन राठौड़,

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में बसता, भारत का जन मन और जनजातियां



डॉ. निमिषा गौड़

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि, अर्थाथ है मातृभूमि आपको हर समय नमस्कार है, आप प्रेम करने वाली है। देशभक्ति और मातृभूमि की श्रद्धा से प्रेरित संघ की प्रार्थना को हाल ही में दक्षिण भारत के कांग्रेसी नेता व कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री ने राज्य की विधानसभा में गाकर दक्षिण भारतवासियों की संघ निष्ठा का पुनः स्मरण करवाया, यद्यपि राजनीतिक दबाव के चलते डी के शिवकुमार ने क्षमा माँग ली। किंतु एक वो भी समय था जब मध्य भारत के कांग्रेसी मुख्यमंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल ने क्षेत्र में जाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शरण ली थी।

स्वतंत्रता के पश्चात्त मध्य प्रदेश के विकास की योजना बनाने के लिए दौरे पर निकले मुख्यमंत्री प. शुक्ल को जशपुर के जंगलों से 'शुक्ला गो बैक' के नारों और काले झंडों का सामना करना पड़ा तब जनजातियों के मध्य विदेशी शासकों की नीतियों से पनपे जहर का सामना कांग्रेसी नेता ने किया। तब अपमान और खिन्ता से भरे मुख्यमंत्री ने जनजातियों के मध्य राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित सामाजिक कार्यों और शिक्षा की आवश्यकता महसूस किया।

इसके लिए पिछड़ी जाति कल्याण विभाग बनाया। इस विभाग की सार संपाल के लिए क्षेत्रीय संगठक के पद पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बाला साहब देशपांडे जी को जिम्मेदारी दी। कांग्रेसी नेता को भी विश्वास था कि जनजातियों के मध्य समरसता का भाव लाने का मादा राष्ट्र का निष्ठावान सेवक ही कर सकता है।

वर्ष 1926 में बाला साहब देशपांडे संघ की शाखा में जाने के कारण पूजनীয় डॉक्टर हेडगेवार के संपर्क में आए व संघ के प्रारंभिक कार्यक्रमों में से एक थे और उन्होंने संघ के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने और संस्कृति के संरक्षण के लिए अपने जीवन की आहुति देने में पीछे नहीं रहे। जिसमें से तिलका भीम, भीमा नायक का ध्येय वाक्य में नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी हम सभी हैं भारतवासी।

वर्ष 1925 से ही एक संगठित और सामर्थ्यवान हिन्दू समाज के निर्माण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनथक रूप में 'हिंदू सोदरा सर्वे' के

भाव से साधना कर रहा था, इसी साधना में जनजातीय समाज के स्वाभिमान और संस्कृति को अपने कार्य में अग्रणी रखते हुए संघ की प्रेरणा से वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य प्रारंभ हुआ, जो कालांतर में पूरे देश में विस्तृत हुआ।

भारतीय संस्कृति के मूल स्वरूप में अखंड भारत की संकल्पना थी, किंतु विदेशी साम्राज्य के हजारों वर्षों के आधिपत्य ने देश का विभाजित करते हुए अनेक जातियों में बांट दिया और जनजाति समाज के मन में हीन भावना भरकर उन्हें अपनी मूल संस्कृति से अलग करने का कुटिल प्रयास भी किया। वर्ष 1954, नियोग समिति की रिपोर्ट में मतांतरण को कानून द्वारा प्रतिबंधित करने की सिफारिश की गई थी। किंतु समिति के खोजपूर्ण दस्तावेजों को भी दरकिनार करके तत्कालीन सरकार हिन्दू समाज की बेरुखी कर रही थी जिसके परिणामस्वरूप जात पात का भेदभाव जनमानस के बीच व्याप्त हो गया था। तत्पश्चात हिन्दू समाज को संगठित करने का बीड़ा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उठाया और आज तक हिन्दू समाज को संगठित करने का तप लाखों स्वयंसेवक कर रहे हैं।

संघ के मूल भाव में जनजाति



अनुसूचित जाति, स्वर्ण, अगड़ा-पिछड़ा और आदिवासी सभी भारत के मूल निवासी हैं। इनमें भेद करने वाले विचारों का संघ प्रतिकार करता है।

ऐतिहासिक पन्नों को पलटने पर ज्ञात होता है कि भारत की जनजातियों की अपनी संस्कृति और सभ्यता रही है। पहाड़ियों की लकीरों में रहने वालों ने अपने जीने के अधिकार के लिए कई लड़ाइयां लड़ीं। सभ्यमान और संस्कृति के संरक्षण के लिए अपने जीवन की आहुति देने में पीछे नहीं रहे। जिसमें से तिलका भीम, भीमा नायक का ध्येय वाक्य में नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी हम सभी हैं भारतवासी।

वर्ष 1925 से ही एक संगठित और सामर्थ्यवान हिन्दू समाज के निर्माण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनथक रूप में 'हिंदू सोदरा सर्वे' के

को दिशा प्रदान की है। भारत के मध्य काल में जातियों के मध्य विभाजन की दार के पश्चात स्वतंत्र भारत में धर्मांतरण की समस्या से जूझ रही जन जातियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक

के विरोध के फलस्वरूप अनेक स्वयंसेवकों और संतों ने अपने जीवन की आहुति तक दी। उड़ीसा के स्वामी लक्ष्मणानंद इसका उदाहरण हैं। असम में 2005 में उल्फा के आतंकियों ने स्थानीय समाज के लिए कार्य कर रहे संघ के कार्यकर्ता शुक्लेश्वर मेड्री की हत्या कर दी। वर्ष 2001 में त्रिपुरा में एनएलएफटी के लोगों ने संघ कार्य को मतांतरण करने में बाधा समझकर संघ के अनेक प्रचारकों का अपहरण कर यातनाएं दी लेकिन संघ प्रतिबंध दबाव से परे मातृभूमि की सेवा के लिए अनवरत सेवारत रहा है।

जनजाति समाज की सुरक्षा और संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दलित पिछड़े और आदिवासी वर्गों के मध्य सामाजिक समरसता के अभियान भी चलाता रहता है। जैसे एक कुआँ एक मंदिर एक श्रमदान जैसे अभियान चलाए गए ताकि दलितों को सामान धार्मिक-सामाजिक अधिकार मिलें। संघ की शाखाओं में जाति की पूछताछ नहीं की जाती, सभी भाई कहलाते हैं। जाति समरसता की नींव संघ की शाखा से शुरू होकर स्वयंसेवक के गृहस्थ जीवन तक सामनता के भाव रहते हैं।

आज भारत में सता सौ से अधिक जन जातियाँ हैं। इनमें 75 जन जातियाँ अति पिछड़ी जनजातियाँ हैं। महाराष्ट्र में कातकारी जनजाति विकास से कोसों दूर थी। वनवासी कल्याण आश्रम के सहयोग से रायगढ़ के मानगांव विद्यालय में कातकारी समाज की पहली शिक्षित पीढ़ी का निर्माण हुआ है। अब इस विद्यालय में कातकारी के साथ लाकुर जनजाति के भी 450 छात्र

को दिशा प्रदान की है। भारत के मध्य काल में जातियों के मध्य विभाजन की दार के पश्चात स्वतंत्र भारत में धर्मांतरण की समस्या से जूझ रही जन जातियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक

के विरोध के फलस्वरूप अनेक स्वयंसेवकों और संतों ने अपने जीवन की आहुति तक दी। उड़ीसा के स्वामी लक्ष्मणानंद इसका उदाहरण हैं। असम में 2005 में उल्फा के आतंकियों ने स्थानीय समाज के लिए कार्य कर रहे संघ के कार्यकर्ता शुक्लेश्वर मेड्री की हत्या कर दी। वर्ष 2001 में त्रिपुरा में एनएलएफटी के लोगों ने संघ कार्य को मतांतरण करने में बाधा समझकर संघ के अनेक प्रचारकों का अपहरण कर यातनाएं दी लेकिन संघ प्रतिबंध दबाव से परे मातृभूमि की सेवा के लिए अनवरत सेवारत रहा है।

जनजाति समाज की सुरक्षा और संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दलित पिछड़े और आदिवासी वर्गों के मध्य सामाजिक समरसता के अभियान भी चलाता रहता है। जैसे एक कुआँ एक मंदिर एक श्रमदान जैसे अभियान चलाए गए ताकि दलितों को सामान धार्मिक-सामाजिक अधिकार मिलें। संघ की शाखाओं में जाति की पूछताछ नहीं की जाती, सभी भाई कहलाते हैं। जाति समरसता की नींव संघ की शाखा से शुरू होकर स्वयंसेवक के गृहस्थ जीवन तक सामनता के भाव रहते हैं।

आज भारत में सता सौ से अधिक जन जातियाँ हैं। इनमें 75 जन जातियाँ अति पिछड़ी जनजातियाँ हैं। महाराष्ट्र में कातकारी जनजाति विकास से कोसों दूर थी। वनवासी कल्याण आश्रम के सहयोग से रायगढ़ के मानगांव विद्यालय में कातकारी समाज की पहली शिक्षित पीढ़ी का निर्माण हुआ है। अब इस विद्यालय में कातकारी के साथ लाकुर जनजाति के भी 450 छात्र

छात्राएं पढ़ रहे हैं।

तू-मैं एक रक्त के भाव से बाला साहब देशपांडे के नेतृत्व में जनजाति समाज के बीच कार्य शुरू हुआ था। आज जनजाति समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए कल्याण आश्रम काम कर रहा है। आश्रम देश के 64 हजार 814 गांवों में विभिन्न प्रकरणों के माध्यम से लाखों जनजातीय वर्ग के बंधु-भगिनी लाभान्वित हो चुके हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, वनवासी कल्याण आश्रम, विश्व हिन्दू परिषद और सेवा भारती अनेक प्रकल्पों के माध्यम से भारत के प्रत्येक प्रांत में निवासरत जनजाति समाज के लिए चिकित्सा, शिक्षा, सुरक्षा, स्वावलंबन और समरसता के साथ-साथ स्वधर्म के जागरण का कार्य कर रहे हैं। एकल विद्यालयों के माध्यम से ये संगठन भारत और भारतीयता की शिक्षा का कार्य एवं प्रचार प्रसार जनजातीय समाज में कर रहे हैं। सूदूर पूर्वोत्तर जलाकों में संघ की शाखाएं स्व, स्वधर्म और समरसता का मंत्र लेकर अनेक स्वयंसेवक, कार्यकर्ता आत्मीय भाव से हिन्दू समाज को एकता के सूत्र में बांध रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की साधना के शताब्दी वर्ष तक अनेक परिवर्तन हुए लेकिन हिन्दू समाज में स्वत्व का भाव संघ का ध्येय है, यह कार्य सतत चल रहा है।

विविधता में एकता से समाज को संगठित करने तथा पूर्वोत्तर के मैतई और कुकी समाज के बीच फैली प्रीतियों को दूर करने के लिए संघ के अनेक कार्यकर्ता बंधुभाषा से सद्भाव बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में इसे मुख्य एजेंडे में शामिल करते हुए "संवाद के जरिए समाधान" का प्रस्ताव पास किया। जनजातीय समाज के नेताओं को संघ के कार्यक्रमों में मुख्यातिथि के रूप में सम्मान देना संघ का सहृदय बंधु भाव की शंशाता है। संघ शताब्दी वर्ष पर पंच परिवर्तन के सूत्रों को आत्मसात कर देश में समरस समाज का संदेश देता है। संघ कार्य का आधार सत्य और प्रेम है।

संघ प्रमुख श्रीमान मोहन भागवत कहते हैं कि शमशान, मंदिर और पानी सब हिन्दुओं के लिए एक होना चाहिए हिंदू समाज के सभी पंथ ,जाति, समुदाय साथ आगे,वही संघ की परिकल्पना है, हमारा उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना है।

'न हिंदू प्रतिमतो भवेत' के भाव से सृष्टि की सत्ता के अधीन सबके कल्याण में ही स्वयंसेवक का सुख है। इस भाव से बना समरस समाज ही संघ का मूल मंत्र है जिसमें जनजातीय समाज हिन्दू समाज का अविन्य अंग है।

–डॉ. निमिषा गौड़,
साहयक आचार्य,
कनोड़िया पी. जी. महिला
महाविद्यालय, जयपुर।

सीनियर नर्सिंग ऑफिसर गुप्ता सम्मानित

भरतपुर (निस)। राजस्थान राज्य नर्सिंग एसोसिएशन के तत्वाधान में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि प्रान्तीय उपाध्यक्ष चन्द्रशेखर लवनिन्या एवं अध्यक्षता जिलाध्यक्ष कालीचरण तराना ने सीनियर नर्सिंग ऑफिसर "चन्द्रप्रकाश गुप्ता को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड" से सम्मानित किया।

भूतपूर्व नर्सिंग अधीक्षक दीवान सिंह ने चन्द्रप्रकाश गुप्ता के सराहनीय कार्यों की प्रशंसा करते हुए उनके योगदान को याद किया। कार्यक्रम में नर्सिंग अधीक्षक लोकेश सिंघल, विष्णु गुप्ता, अभय प्रताप, प्रियांका देवी, प्रीति सिंह, दिलीप गुप्ता, विजय शर्मा, तरूण सिंघल, योगेश गर्ग, मनोज सिंघल एवं अम्बेश गोयल उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन "लोकेश सिंघल" ने किया तथा आधार "विष्णु गुप्ता" ने व्यक्त किया।

2 लाख एलईडी स्ट्रीट लाइट से राजस्थान की हर गली-हर सड़क होगी जगमग

त्योहारी सीज़न से पहले सीएम की अहम घोषणा



कुणाल वशिष्ठ

राज्य सरकार की ओर से राज्यवासियों के लिए बड़ी सौभाग्य दी गई है। रविवार को हुई मंत्रिमंडल की बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नगरीय क्षेत्रों की रात्रिकालीन सुरक्षा,

ऊर्जा बचत और बेहतर यातायात व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए बजट 2025-26 में प्रस्तावित 1 लाख एलईडी स्ट्रीट लाइटों की संख्या बढ़ाकर अब 2 लाख करने का अहम निर्णय लिया है।

श्री शर्मा ने कहा कि हमारा संकल्प है कि प्रदेश की हर सड़क, हर मोरल्ला और हर बाजार रोशनी के यह निर्णय न केवल रोशनी का कार्य नहीं बल्कि सुरक्षित और आधुनिक राजस्थान के निर्माण की दिशा में एक ठोस कदम है। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि त्योहारी सीज़न को देखते हुए इस कार्य की शुरुआत दीपावली से पूर्व की जाए ताकि प्रदेश की सड़कें और भी सुंदर दिखाई दें।

स्वायत्त शासन विभाग के सचिव श्री रवि जैन ने बताया कि राज्य की 312 नगरीय निकायों में बढ़ती अनाबदी और क्षेत्रीय विस्तार को देखते हुए आधुनिक प्रकाश व्यवस्था अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के निर्णय के अनुरूप पुरानी और कमजोर लाइटों को हटाकर नई एलईडी लाइटें लगाई जाएंगी। श्री जैन कहा कि यह निर्णय न केवल शहरों की सूरत बदलेगा बल्कि नागरिकों के जीवन में सुरक्षा और सहजता का भाव भी जोड़ेगा। यह पहल ऊर्जा की बचत करेगी, दुर्घटनाओं में कमी लाएगी और लोगों को रात के समय भी सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराएगी। मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार विभाग अतिशीघ्र

प्रभावी कार्ययोजना तैयार कर इस कार्य को शुरू करेगा।

उल्लेखनीय है की स्वायत्त शासन विभाग द्वारा शहर चले अभियान के तहत 15 सितंबर से 2 अक्टूबर तक राज्य की सभी नगरीय निकायों में नई स्ट्रीट लाइट लगाने और बंद लाइट को चालू करने का कार्य भी किया जाएगा। इसी के साथ ही स्वायत्त शासन विभाग द्वारा नगरीय निकायों में आमजन की स्ट्रीट लाइट, पेयजल, सड़क से संबंधित शिकायतों और सुझाव के लिए रायच स्तरीय हेल्पलाइन नंबर 181 भी जारी किया गया है।

–कुणाल वशिष्ठ,
एपीआरओ, स्वायत्त शासन
विभाग, राजस्थान